मनोज
कॉमिक्स
विशेषांक

ख्या: 123 मूल्य: 16.00

सत्तर करोड़ का मुर्दा

राम-रहीम

दैनिक सुबह

'तलाश है सत्तर करोड़ के मुर्दे की'
जी हाँ जनाब! उस मुर्दे की कीमत सत्तर करोड़ रुपये है। यदि किसी सज्जन को उस मुर्दे के बारे में जरा भी मालूम हो तो वे कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें। उसे दस हजार रुपये बतौर इनाम दिया जाएगा।
'छाया'
होटल शालीमार,
रूम नं. 104, उज्जैन.

इस अजीबो-गरीब विज्ञापन को पढ़कर राम के माथे पर सोच के बादल मंडरा उठे।

इस विज्ञापन में जरूर कोई राज छिपा है रहीम।

यह तुम कैसे कह सकते हो राम भइया। हो सकता है किसी सनकी ने मजाक किया हो।

...हीम! हर ...पीछे कोई ...छिपा होता है। ...व्यक्ति केवल ...नाम पर पांच ...पये खर्च नहीं ...सकता।

इसका मतलब सत्तर करोड़ के मुर्दे का रहस्य जानने के लिए हमें फौरन उज्जैन जाना होगा।

...में होटल शालीमार ढूंढने और उसके रूम नं. 105 ...पहुंचने में राम-रहीम को रात हो गई।

दरवाजा लॉक है राम भइया

इसका मतलब वह लड़की कहीं बाहर गई हुई है। अंदर चलो, यह उसके विषय में जानने का सुनहरा मौका है।

'मास्टर की' से ताला खोल कर दोनों अन्दर प्रवेश कर गए।
अच्छी तरह तलाशी लो। यदि वह अपराधी हुई तो उसके खिलाफ कोई न कोई सबूत अवश्य हाथ लगेगा।
लेकिन वह तलाशी प्रारंभ कर पाते उससे पहले ही गैलरी में किसी के कदमों की आहट गूंज उठी।
कोई इस कमरे की ओर ही आ रहा है।
शायद धरा! फौरन डबल बैड के नीचे छुप जाओ।
ठक... ठक... ठक...
किंतु आने वाला शख्स धरा नहीं एक पचपन-साठ साल का बूढ़ा था।
दरवाजा खुला है, किन्तु अन्दर कोई नजर नहीं आ रहा।
हो सकता है सत्तर करोड़ के मुर्दे का विज्ञापन देने वाली धरा नामक लड़की जल्दबाजी में दरवाजा लॉक करना भूल गई हो। खैर, अब तक वह लौट कर नहीं आई मुझे इन्तजार करना होगा।
राम-रहीम के मस्तिष्क में सस्पैंस का कीड़ा रेंग रहा था।
क्या इसे दबोच लें?
नहीं! इस बूढ़े के हावभाव बता रहे हैं कि यह भी हमारी तरह अखबार में विज्ञापन पढ़ कर धरा से मिलने आया है।

मगर इसकी उस विज्ञापन में क्या दिलचस्पी है? और यह वास्तव में कौन है? यह सब जानने के लिए फिलहाल हमारा छुपा रहना ही बेहतर है।
धरा जो इस सारे फसाद की जड़ थी, जिसे भगवान ने बड़ी फुर्सत से सांचे में ढाला था, जो आसमान से उतरी परी सी लगती थी, रूम नं. 104 की ओर चली आ रही थी।
लगता है मेरा विज्ञापन देना व्यर्थ ही गया। अब तक किसी ने मुझसे सम्पर्क नहीं किया।
रा के मस्तिष्क में तेज गति से दौड़ रही विचारों की ट्रेन अचानक उस समय रुक गई, जब उसने अपने कमरे का दरवाजा खुला पाया।
खतरा!
धड़कते दिल से धरा ने कक्ष में प्रवेश किया।
रा को देख खुशी से चमक उठी थीं उस बूढ़े की आँखें।
ओह! तो आप हैं वो हस्ती जिसने अखबार में 'सत्तर करोड़ के मुर्दे' का विज्ञापन दिया है।
तू कौन है बुड्ढे?

प्रो. नारंग, जो अखबार में विज्ञापन पढ़ कर सीधा तुम्हारे पास दौड़ा चला आ रहा है। क्योंकि मेरे सिवाय कोई अन्य उस विज्ञापन में छिपे 'कूट संदेश' को समझ भी कैसे सकता था।
तब तो तुम्हारे पास ऐसी तीन डिस्क भी होनी चाहिए।
ठीक कहा तुमने! ऐसी ही तीन डिस्क मेरे पास भी हैं। किन्तु तुम्हें यह डिस्क कहां से मिली? इन्हें तो...
प्रो. देशपाण्डे के पास होना चाहिए था। यही कहना चाहते थे न तुम?
हां... और तुम्हारे पास इनकी मौजूदगी न केवल इस बात का सबूत है कि प्रो. देशपाण्डे मर चुका है, बल्कि तुम इन डिस्क के राज से भी परिचित हो।
हां, किन्तु वह राज अधूरा था, क्योंकि बाकी की तीन डिस्क तुम्हारे पास थीं और तुम तक पहुंचने के लिए ही मैंने अखबार में वह विज्ञापन दिया था।
ये डिस्क कोई रसगुल्ला नहीं हैं बूढ़े शैतान, जिन्हें तू धरा से छीनेगा और हजम कर जाएगा।

और अब यदि तुमने दोबारा मुझसे डिस्क छीनने की कोशिश की तो मैं अपने हिस्से वाली दोनों डिस्क नष्ट कर दूंगी... और तब तुम्हारे पास मौजूद डिस्क भी किसी काम की नहीं रहेगी।
नहीं... ऐसा गजब मत करना। यदि मैं मर गया तो इन डिस्क में जो राज छुपा है, वह भी मेरी मौत के साथ ही दफन हो जाएगा।

त... तुम चाहती क्या हो?
फिफ्टी-फिफ्टी!

मुझे मंजूर है। इन डिस्क में जो राज छुपा है, अब उसे हम दोनों साथ मिलकर हल करेंगे। मगर इस काम में हमें हर फन में माहिर दो बदमाशों की आवश्यकता पड़ेगी।

और मैं ऐसे हरफन मौलाओं की खोज कर दो दिन बाद तुमसे फिर मिलूंगा धरा।
आओ, मैं तुम्हें बाहर तक छोड़ आती हूं।

अगले क्षण राम-रहीम की उपस्थिति से अनजान दोनों कमरे से बाहर निकल गए।

राम-रहीम के मस्तिष्क में विचारों की आंधी चल रही थी।
यह तो बड़ी उलझी हुई कहानी लग रही है राम। आखिर उन डिस्कों में क्या राज छुपा है?
फिलहाल तो कुछ भी कहना कठिन है। मगर उन डिस्क में छुपे राज़ तक पहुंचने के लिए मेरे दिमाग में एक प्लान है। आओ मेरे साथ।

दोनों निःशब्द कमरे की खिड़की से बाहर निकल गए।

रात का अंधियारा छाने लगा था, अब प्रो. नारंग इस घने झुरमुट के बीच से गुजर रहा था।
जैसे हरफन मौला बदमाशों की मुझे तलाश है, वो पता नहीं मुझे मिल भी पायेंगे या नहीं।

एकाएक राम पेड़ों के झुरमुट से बाहर निकला।
चुपचाप हाथ ऊपर और माल जेब से बाहर कर बुड्ढे वरना मुण्डी काट दूंगा... समझा कि नहीं।
कौन हो तुम?

अबे, झुमरू दादा को नहीं पहचानता साले। उस्ताद उज्जैन का सबसे टॉप का दादा है। अक्खा उज्जैन उस्ताद के नाम से थर-थर कांपता है। समझा कि नहीं।
चेला ठीक बोलता है बुढ़ऊ। चल, जो माल हो फटाफट निकाल, वरना जान से जाएगा।

प्रो. नारंग का दिमाग तीव्र गति से कार्य कर रहा था।
यह दोनों मेरे काम आ सकते हैं।
सिर्फ चाकू ही चलाते हो या गोली चलाना भी जानते हो?
गोली क्या चीज है बुढऊ। दौलत के लिए तो अपुन का उस्ताद धधकती आग में कूद सकता है... शेर के जबड़े में हाथ डाल सकता है... तेजाब के कुण्ड में डुबकी लगा सकता है। क्यों उस्ताद, ठीक बोला न?
ठीक बोला चेले लेकिन यह बुढऊ इतना सवाल काहे को पूछेला है। अखबार में इंटरव्यू छापेगा क्या?

नहीं, मैं तुम्हें मालामाल करना चाहता हूं। अगर तुम मेरे साथ काम करोगे तो मैं तुम्हें दौलत में तौल दूंगा।
तू तो अपुन से भी बड़ा उस्ताद लगता है बुढऊ। अपुन तेरे साथ हैं।
अगली रात शिप्रा नदी के किनारे स्थित खंडहरों में कुछ साये नजर आ रहे थे।
आओ धरा! हम तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे थे।

इनसे मिलो, यह हैं झुमरू और लोटिया। दोनों उज्जैन के माने हुए दादा हैं। हमें ऐसे ही बदमाशों की तलाश थी।
नमस्ते भेन जी!
शट अप!

ऐ छोकरी, अपुन को अंग्रेजी में गाली देती है। मुण्डी काटकर हाथ पर रख दूंगा।

अबे जा-जा... बहुत देखे हैं तेरे जैसे!

आपस में झगड़ना बन्द करो और मेरे पीछे-पीछे चले आओ।

नारंग के पीछे-पीछे सभी एक विशाल हॉल में पहुंचे।

यह तो तुम देख ही रहे हो कि सामने दीवार पर पर्दा लगा है और यह प्रोजेक्टर है। साथ में प्रोजेक्टर को चलाने के लिए मैंने पोर्टेबल जनरेटर का भी इन्तजाम किया है।

ये पांचों डिस्क दरअसल सतरंगी व कलरफुल पारदर्शक फिल्में हैं... और इनके अंदर कोई न कोई चित्र छिपा है। अब मैं एक-एक करके ये सभी डिस्क इस प्रोजेक्टर में डाल रहा हूं।

सभी डिस्क प्रोजेक्टर में सैट करने के पश्चात प्रो. नारंग ने जनरेटर ऑन किया।

इसमें एक विशेष बल्ब लगा है जो प्रकाश की तीव्रता को हजार गुणा बढ़ा देता है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह साधारण प्रोजेक्टर नहीं।

चारों मंत्रमुग्ध से उस दृश्य को देख रहे थे।
यह कैसा दृश्य है? दो दरवाजे... और उनके निकट खड़े दो पहरेदार।
अपुन को तो ऐसे लगता है जैसे कोई तिलस्मी फिल्म देख रहा हूं। ओ बुढ़ऊ, तू अपुन को काम के वास्ते लाया है या फिल्म दिखाने?
तू बोलता बहुत है लोटिया। फौरन यहां से बाहर चला जा।
गलती हो गई बाप! अब नहीं बोलूंगा कान पकड़ता हूं।
नहीं। मैं तुझे एक पल भी अपनी आंखों के सामने खड़ा नहीं देख सकता। चल फूट यहां से, नहीं तो पड़ेगा एक लाफा।
समझ गया उस्ताद।
अगले क्षण रहीम सिर पर पैर रख कर भागा।
अब यह परेशान नहीं करेगा। तुम हमें दूसरा दृश्य दिखाओ।
ओ.के.।
प्रो. नारंग द्वारा प्रोजेक्टर की नॉब घुमाते ही पर्दे पर दूसरा दृश्य प्रकट हुआ।

तीनों अपलक उस दृश्य को निहारते रह गए।
कसम महाकालेश्वर की। यह कैसा दृश्य है... एक सेठ और सेठानी बैठे हुए हैं। सामने तराजू रखा है... और तराजू के निकट ढेर सारे बाट की शक्ल के पत्थर रखे हुए हैं।
ये दृश्य ही तो वे दरवाजे हैं जो हमें सफलता की उस मंजिल तक ले आएंगे, जहां भाग्य हमारा इंतजार कर रहा होगा।
कहते हुए प्रो. नारंग ने प्रोजेक्टर की नॉब को घुमाया मगर राम का ध्यान कहीं दूसरी ओर था।
क्या रहीम मेरा इशारा समझ पाया होगा?
राम का इशारा तो मैं तभी समझ गया था। जब उसने मुझे डपट कर बाहर जाने को कहा था।
न जाने क्यों प्रो. नारंग हमारे लिए एक रहस्य बनता जा रहा है।
एक अकेला बूढ़ा व्यक्ति खण्डहर में जनरेटर, प्रोजेक्टर वगैरह कैसे ले जा सकता है... और फिर उसने इतनी जल्दी इन सब चीजों का इन्तजाम कैसे किया होगा?
अरे! वह क्या है?
अचानक रहीम चौंका था।
रहीम ने लपक कर जमीन पर पड़े अधजले सिगरेट के टुकड़ों को उठाया।
ये अधजली सिगरेटें इस बात की गवाह हैं कि कुछ देर पहले यहां कोई व्यक्ति मौजूद था।
यानी प्रो. नारंग अकेला नहीं है। मुझे यह रहस्य राम को बताना होगा।

त्पश्चात आखिरी दृश्य पर्दे पर प्रकट
आ। जिसे तीनों ने आंखें फाड़-फाड़
र देखा।

गहरी निराशा के साथ नारंग ने प्रोजेक्टर ऑफ किया।

डैम इट! न जाने इन दृश्यों में कैसे-कैसे रहस्य दबे पड़े हैं। पता नहीं हम वराहमिहीर के खजाने तक पहुंच भी पाएंगे या नहीं।

कौन वराहमिहीर? कैसा खजाना? यह तुम क्या बोल रहा है बाप? अपुन की समझ में तो कुछ नहीं आयेला है।

तुमने राजा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का नाम तो सुना ही होगा झुमरू?
सुना भी है और किताबों में पढ़ा भी है।
तू फिर आ गया लोटिया के बच्चे!
हां उस्ताद, तुझसे दूर रहकर मन नहीं लग रहा था। मुझे यहीं रहने दो।
ठीक है, मगर थोबड़ा बंद करके बैठना।
प्रो. नारंग ने अपनी बात जारी की।
अगर तुम चन्द्रगुप्त के विषय में जानते हो तो तुम्हें मालूम होगा कि उनके दरबार में वराहमिहीर नामक एक विद्वान था। जिसे हम वैज्ञानिक का नाम दें तो गलत नहीं होगा।
वराहमिहिर ने मानव जाति की भलाई के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रयोग किए थे। जैसे पानी को पेट्रोल बनाना, तांबे को सोने में बदलना, कोयले को हीरा बनाना इत्यादि।
और इन प्रयोगों के निष्कर्ष व फार्मूले उसने सीसे के आयताकार पत्तरों पर लिखकर उन्हें ऐसे कक्ष में रख दिया था, जहां तक पहुंचने के लिए हमें वह पांच द्वार खोलने पड़ेंगे जो तुमने अभी-अभी पर्दे पर देखे हैं।

मगर तुम यह सब कैसे जानते हो?
वही बताने आ रहा हूं। दरअसल यह कहानी धरा द्वारा अखबार में 'सत्तर करोड़ के मुर्दे' का विज्ञापन देने से भी बहुत पहले शुरू होती है।

उन दिनों उज्जैन के किले में खुदाई का कार्य चल रहा था।

कार्य मेरे व प्रो. देशपाण्डे की देखरेख में हो रहा
हम दोनों ही देश के जाने-माने पुरातत्ववेता थे।

एक रात जब बारिश की वजह से खुदाई का काम अगली सुबह तक के लिए रोक दिया गया था... हम यूं ही किले में टहल रहे थे कि अचानक देशपाण्डे चीख उठा।
व... वो क्या है नारंग?

अरे! यह तो कोई छोटा सा बॉक्स है! जिस पर खुदाई के दौरान शायद मजदूरों की निगाह नहीं पड़ी होगी।

हमने धड़कते दिल से वह बॉक्स खोला। उसमें सिक्के के आकार की पांच डिस्क व संस्कृत में लिखे कुछ भोजपत्र रखे हुए थे।
देशपाण्डे को संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। जैसे-जैसे देशपा
उन भोजपत्रों में लिखी इबारत पढ़ता गया, उसके नेत्र आ
के मारे चौड़े होते गए।
लगता है हमारा भाग्य हम पर मेहरबान हो गया है नारंग!
तत्पश्चात देशपाण्डे बराहमिहिर के वैज्ञानिक प्रयोगों के फार्मूले व उनके छुपे होने की भोजपत्रों में लिखी सारी जानकारी मुझे देता चला गया।
हम ये डिस्क सरकार को नहीं सौंपेंगे नारंग। क्योंकि मैंने वह खजाना हासिल करने का निश्चय कर लिया है।
मैं नहीं, हम!
एक ही बात है!
एक ही बात कैसे है। यदि कल को तुम ये सभी डिस्क लेकर चम्पत हो गए तो मैं तुम्हें कहां ढूंढता फिरूंगा।
मेरी ज़िद के आगे आखिर देशपाण्डे को झुकना ही पड़ा।
एक काम करो! तीन डिस्क तुम रखो, दो मैं रखता हूं। इस तरह हमारे कहीं भाग जाने का एक-दूसरे को कोई डर नहीं रहेगा।

कुछ ही दिनों में खुदाई का काम पूरा हो गया। किले में जो कुछ निकला वह ईमानदारी से सरकार के हवाले करके हम दोनों अपने-अपने घर लौट गए।

सरकार खुश थी कि उसे उज्जैन के किले से अमूल्य चीजें प्राप्त हुई। मगर उसे क्या मालूम था कि जो हमें मिला था, वह उन सारी अमूल्य चीजों का भी बाप था।

एक दिन खजाना हासिल करने की पूरी तैयारी करके हम दोनों पुनः उज्जैन आ गए।
चियर्स। उस खजाने के नाम, जो कुछ ही दिनों में हमारे हाथ आने वाला है।
चियर्स!

देशपाण्डे ने अभी शराब के दो घूंट हलक में उतारे ही थे कि वह मछली की भांति तड़पने लगा।
आह! ये तूने शराब में क्या मिला दिया कमीने!
जहर! तेरी मौत के बाद उस खजाने का मालिक सिर्फ मैं बनूंगा।

एकाएक देशपाण्डे मुझे धक्का देकर दरवाजे से बाहर भागा।
धड़ाक
यदि खजाना मेरा नहीं हुआ तो तेरा भी नहीं होगा नारंग।

जब तक मैं सम्भल कर खड़ा हो पाता। तब तक देशपाण्डे रात के अन्धेरे में न जाने कहां गायब हो गया था।

सम्पूर्ण खजाना अकेले हड़पने का मेरा सारा सपना चकनाचूर हो गया था। क्योंकि मेरे पास तो तीन ही डिस्क थीं। जबकि खजाने तक पहुंचने के लिए पांचों डिस्क का होना जरूरी था।

अब इससे आगे की कहानी मैं तुम्हें सुनाती हूं प्रो. नाग! मैं एक चोर व अनाथ लड़की थी। लोगों की जेबें काटकर ही मैं अपना पेट भरती थी।

उस रात मैं एक व्यक्ति की जेब काटते हुए देख ली गई थी। इसीलिए अपनी जान बचा कर भाग रही थी।
चोर... चोर...

आखिरकार भागते हुए मैं भीड़ की नजरों से ओझल हो गई।
हम्फ...हम्फ... बच गई ...वरना गई थी दो-तीन महीने के लिए जेल के अन्दर!

मैं प्रो. देशपाण्डे यह स्वीकार करता हूं कि प्रो. आरुण मेरा दोस्त होते हुए भी अव्वल दर्जे का मक्कार आदमी है। पता नहीं वह मेरे हिस्से की डिस्क हासिल करने के लिए कब क्या कर बैठे।

इसीलिए उन डिस्क के लिए हमने एक कोड निर्धारित किया है 'सत्तर करोड़ का मुर्दा'। जब भी मुझे व प्रो. नगेन्द्र को आपस में मिलना होगा तो हम डिस्क की बजाए इसी कोड का इस्तेमाल करेंगे। यही कोड हमारे आपस में सम्पर्क करने का तरीका होगा।

शपाण्डे की डायरी पढ़कर मैं अवाक रह गई।

आज तक सिर्फ लोगों की जेबें काटकर मैंने अपना पेट भरा है। मेरी गरीबी दूर हो सकती है, यदि बाकी की तीन डिस्क भी मुझे मिल जाएं।

फिर अगले दिन अखबारों में 'सत्तर करोड़ के मुर्दे' की तलाश वाला विज्ञापन छपा। जिसे पढ़ कर तुम दौड़े-दौड़े मुझसे मिलने चले आए। क्योंकि उस विज्ञापन में जो कुछ संदेश छिपा था, उसे सिर्फ तुम ही समझ सकते थे।
अब आगे का क्या प्रोग्राम है बाप?

अब हमें कल से उज्जैन के जंगलों में छिपी वराहमिहीर की गुफा को खोजना होगा। मगर ध्यान रहे, जो कुछ तुमने यहां देखा व सुना, उसके बारे में किसी तीसरे को मालूम न पड़े।

नहीं मालूम पड़ेगा बाप!
न जाने क्यों मुझे तुम्हारी शक्ल भारत के विख्यात जासूस राम से मिलती-जुलती लगती है।

धरा की बात ने बौखला कर रख दिया था राम को।
म... मिलती होगी। जरूर मिलती होगी। आखिर सैंकड़ों लोग हैं इस दुनिया में, जिनकी शक्लें आपस में मिलती हैं।
वैसे तुम चाहो तो आज से हमें झुमरू व लोटिया की जगह राम-रहीम कह कर ही पुकार सकती हो मेनजी।
शट अप!

उसी रात उज्जैन के एक होटल में।
शुक्र है! तुमने ऐन वक्त पर बात सम्भाल ली। वरना हमारा तो रहस्य लगभग खुल ही चुका था।

खण्डहर के बाहर मुझे कुछ अधजली सिगरेट के टुकड़े मिले हैं। जो इस बात की तस्दीक करते हैं कि वारंग अकेला नहीं है, बल्कि वह किसी बहुत बड़ी फिराक में है।
ठीक कहते हो तुम। इसीलिए मैंने चीफ अंकल को सारी रिपोर्ट भेज कर एक प्लान तैयार किया है।

राम ज्यों-ज्यों रहीम को अपना प्लान बताता गया, उसके होंठों की मुस्कराहट गहरी होती चली गई।

अगले दिन इस घने जंगल में गुफा की तलाश करते उन्हें चार घंटे से ज्यादा व्यतीत हो चुके थे।
अब और नहीं चला जाता।
इतनी जल्दी थक गईं भेन जी। जबकि दौलत के पीछे तो आदमी जिन्दगी भर दौड़ता है।

लोटिया! तुम थोड़ी देर धरा के पास बैठो। तब तक हम आगे जाकर गुफा की तलाश करते हैं।

धरा के एकाएक थक कर बैठ जाने व फिर काफी देर तक उठने के कारण झुंझला पड़ा था रहीम।
अब उठिये भी भेन जी! क्या जन्म-जन्म तक यहीं बैठी रहेंगी?
प... प्यास लगी है। अगर कहीं से पानी मिल जाता तो...

मर गए। पानी की बॉटल्स तो झुमरू उस्ताद ले गया। आप यहीं बैठिए। मैं कहीं से थोड़ा पानी लेकर आता हूं।

अभी रहीम पानी की तलाश में थोड़ी ही दूर आया था कि समूचा वातावरण धरा की चीख से गूंज उठा।

बचाओssss

या अल्लाह! यह तो धरा की चीख है।

हीम की हरकत से उत्तेजित होकर तीनों भेड़िये
एकाएक धरा को छोड़ कर रहीम की तरफ लपके।
गुर्रsss
गुर्रsss
गुर्रsss

बला की फुर्ती से रहीम ने वह नुकीला बांस एक भेड़िये की आंख में घुसा दिया।
खच्च

अब बारी थी दूसरे भेड़िये की जिसके मस्तक में रहीम का चाकू पेवस्त हो चुका था।

मगर लाख कोशिश के बावजूद तीसरे भेड़िये से नहीं बच पाया रहीम।
आह!

दूर हट शैतान!
धड़ाक

इससे पहले कि भेड़िया दोबारा रहीम पर वार करता। रहीम के हाथ में एक मजबूत जंगली बेल आ गई।
अब आ साले, डर गया क्या?

क्रोधित भेड़िये ने रहीम पर जम्प लगाई, मगर रहीम के हाथ में थमी मजबूत जंगली बेल भेड़िये के लिए फन्दा बन गई।

थोड़ी ही देर में भेड़िये की आत्मा उसका साथ छोड़ चुकी थी।
अब कोई डर नहीं भेन जी। तीनों मर गए।
त... तुम्हारा कन्धा जख्मी हो गया है लोटिया। लाओ मैं पट्टी बांध देती हूं।

न जाने क्यों रहीम के कन्धे पर अपना रूमाल बांधते समय धरा की आंख से आंसू छलक पड़े
अरे! आप रो रही हैं भेन जी।
आज मुझे अपना बचपन याद आ गया भइया। मां बाप का साया तो बहुत पहले ही सिर से उठ गया था

एक भाई था। वह भी इलाज के अभाव में तड़प-तड़प कर मर गया। आज अगर वह जिन्दा होता तो तुम्हारी ही उम्र का होता भइया
पगली! बहन मैं भी तो तुम्हारे भइया जैसा ही हूं।

बचपन से चोरी करते-करते मैं अपने स्वार्थ में इतनी अन्धी हो गई थी कि अपने ही देश की अमूल्य धरोहर चुराने जा रही थी। मगर आज तुमने मेरी जान बचा कर मेरी आंखें खोल दीं भइया।
मैंने फैसला कर लिया है कि मैं शाहमिहीर का वो अनमोल खजाना प्रो. नारंग जैसे दुष्ट के हाथों में नहीं पड़ने दूंगी।
यदि इन आंसुओं के साथ तुम्हारे मन का सारा मैल धुल चुका है धरा, तो सुनो... आज मैं तुम्हें अपनी व डमरू उस्ताद की सारी हकीकत बताता हूं।
तत्पश्चात रहीम अखबार में छपे 'सत्तर करोड़ के मुर्दे' के विज्ञापन को पढ़कर अपने उज्जैन आने व बदमाशों के रूप में प्रो॰ नारंग से मिलकर इस अभियान में शामिल होने की सारी सच्ची कहानी धरा को सुनाता चला गया।
सुनकर खुशी से उछल पड़ी थी धरा।
मैंने कहा था ना कि तुम ही राम-रहीम हो। मैंने कहा था ना-कहा था ना।
हां, मगर यह सारी हकीकत तुम्हें अपने तक ही सीमित रखनी होगी। यदि नारंग को पता चल गया तो हमारा सारा प्लान चौपट हो जाएगा।
अगले पल रहीम ने जेब से एक मूंगफली के दाने जैसी वस्तु निकाली।
यह एक रिमोटबम है। इसे अपने बालों में छुपा लो धरा। पता नहीं कब दुश्मन को मारने के लिए इसकी जरूरत पड़ जाए।
मगर यह काम कैसे करता है?

यह देखो। मेरे पास एक सिगरेट केस है। इसमें दिखाने के लिए ऊपर सिगरेट के टोटे फंसाए गए हैं...
मगर इसके अन्दर छोटा सा रिमोट छुपा है। जैसे ही इसका स्विच दबाया जाएगा, यह बम फौरन फट जाएगा।
ओह!
अब जल्दी चलो। राम हमारा इन्तजार कर रहा होगा।
इधर राम व प्रो० वारंग झाड़ियों के पीछे किसी गुफा को खोजने में कामयाब हो गए थे।
यही है वो गुफा, जो हमें वराहमिहिर के अद्भुत खजाने तक पहुंचाएगी।
खजाने की नहीं, यह मौत की गुफा है। बेवकूफ, इसमें जाकर कोई नहीं बचेगा, सब मरेंगे...सब मरेंगे।
राम और प्रो० वारंग फौरन आवाज की दिशा में पलटे।
कौन हो तुम?
हा...हा...हा... हम हैं औघड़ बाबा। इस जंगल के बादशाह। तुम इस गुफा में आ तो सकते हो, मगर लौट कर नहीं आ सकते।

ऐसा गजब नहीं कीजिए! कुछ तो उपाय कीजिए बाबा!
उपाय है! तुम्हें हमारा यह प्रसाद ग्रहण करना पड़ेगा।
मानवता की भलाई के लिए आप जो भी कहेंगे, वह मैं करूंगा बाबा! यहां तक कि बिल्ली का मांस भी खाऊंगा।
औघड़ बाबा द्वारा बिल्ली के मांस में से नोचे गए टुकड़े को प्रसाद समझ कर खा गया राम।
तू भी ले मानव!
नहीं... मैं बिल्ली का मांस नहीं खाऊंगा।
तूने यह प्रसाद ग्रहण न करके हमारा अपमान किया है दुष्ट! अब सिर्फ यही बालक वराहमिहीर के खजाने तक पहुंचेगा... और तू लाख चाहकर भी उन दरवाजों का भेद नहीं समझ पाएगा।
इस पापात्मा को क्षमा कीजिए बाबा! इसे मेरे साथ खजाने तक पहुंचने की आज्ञा दीजिए।
तू कहता है तो आज्ञा दी!

अगले क्षण बिल्ली का मांस नोच-नोचकर खाते औघड़ बाबा आगे बढ़ गए।
बम... बम... भोलेनाथ।
यह तो गड़बड़ ही गई। अब समय आ गया है, अब मुझे अमेरिका से आए बिल व उसके एजेन्टों से सम्पर्क करना होगा।

तब तक रहीम व धरा भी वहां पहुंच गए।
अब हमें गुफा में प्रवेश का कार्यक्रम कल तक के लिए टालना होगा, ताकी सभी परिस्थितियों पर पूरी तरह विचार किया जा सके।
रहीम के कन्धे को क्या हुआ। यह होटल चल कर पूछूंगा।

उसी रात उज्जैन से कहीं दूर।
मैं वह गुफा खोजने में कामयाब हो गया बिल साहब।

यह था अमेरिकी जासूसी संस्था सी.आई.ए.का खूंखार जासूस बिल जिसे वराहमिहीर के खजाने की चाह हिन्दुस्तान खींच लाई थी।
गुड! हम पूरी कहानी सुनना मांगता है प्रो० नारंग। तुम्हें तो मालूम है कि तुमने हमसे वराहमिहीर के स्वर्ण पत्तरों का सौदा पचास करोड़ डालर में तय किया है।
मैं जानता हूं बिल साहब... और आपको पूरी जानकारी देना तो मेरा फर्ज है।

नारंग से सारी कहानी जानकर बिल की कंचे जैसी आंखें चमक उठीं।
वैरी गुड! अब हम भी तुम्हारे पीछे-पीछे उस गुफा में प्रवेश करेगा।

लेकिन बिल साहब उस औघड़ बाबा की चेतावनी।

बकवास। तुम और तुम्हारा बाबा, सब अन्धविश्वासी हैं। देखना, हमें गुफा में कुछ नहीं होगा।
मगर उस छोकरी और झुमरू दादा के चेले लोटिया का क्या किया जाए जो बेवजह मेरे लिए सिरदर्द बने हुए हैं।
उनका भी इलाज है हमारे पास। ध्यान से सुनो।
तत्पश्चात बिल अपनी योजना बताने लगा।
मगर वह दोनों इस बात से अनजान थे कि उनकी एक-एक हरकत पर निगाह रखी जा रही थी।
और निगाह रखने वाली आँखें बिल के दल में नए-नए शामिल हुए इस व्यक्ति की थीं जो चुपचाप वहां से खिसक चुका था।
मुझे फौरन 'शेर जी भाई' को सारी सूचना देनी होगी।
कुछ समय पश्चात।
हैलो शेर जी भाई, अपुन उज्जैन से आपका खास आदमी हैदर बोलता है बाप!
बोलो हैदर क्या बात है?

बड़े काम की खबर सुनाई है तूने डैंडर। जी खुश कर दिया तूने शेर जी भाई का। मगर तुझे इन सब बातों की भनक कैसे पड़ी?

इधर उज्जैन में बहुत गड़बड़ होयेला है बाप। बड़ा-बड़ा लोग इसमें फंसा है। अमेरिका तक से पार्टी आई है। अरबों रुपये के खजाने का चक्कर है बाप।

क्योंकि अपुन उस अमेरिकी गैंग में शामिल हो गया है बाप। उन्हीं की बातों से मालूम पड़ा।

हम अपने दल-बल के साथ उज्जैन पहुंच रहे हैं। तब तक तू उसी अमे पार्टी में शामिल रह क उनकी सूचना मुझे पहुंचाता रह।

ओ. के.... ओ. के. हम कोल्ड ड्रिंक्स ले लेते हैं।
यह ठीक रहेगा।
अगले क्षण चार गिलास टकराये।
चियर्स! उस खजाने के नाम। जो अतिशीघ्र हमारे हाथ आने वाला है।
आमीन!
अभी धरा ने अपना गिलास खाली किया ही था कि उसका सिर चकराने लगा।
क्या हुआ धरा?
पता नहीं। मैं अपने आपको एकाएक बहुत कमजोर महसूस कर रही हूं।
तूने कोल्ड ड्रिंक्स में कुछ मिला तो नहीं दिया नारंग के बच्चे?
मैं... मैं भला ऐसा क्यों करूंगा। जरा सोचो, यदि मैं ऐसा करता तो वह गिलास हम चारों में से किसी के भी पास आ सकता था। सिर्फ धरा के पास ही क्यों गया?
नारंग शायद ठीक कह रहा है। अब जबकि हम गुफा की तरफ रवाना होने वाले हैं, तो वह ऐसी जलील हरकत भला क्यों करेगा, जिससे हमारा सारा प्रोग्राम बिगड़ जाए।

तुम्हें धरा की देखभाल के लिए यहीं रुकना होगा लोटिया! मैं नारंग के साथ गुफा में आऊंगा!
ओ. के.!

अभी राम व नारंग को गए कुछ ही समय बीता था कि
का दरवाजा खुला।
भड़ाक
क... कौन है?

इससे पहले कि रवि कुछ समझ पाता।
आहऽऽऽ
ठक
उफ!

ले चलो इन्हें हमारे बॉस 'बिल' के पास।

निःसंदेह एक भयानक जंग की शुरूआत हो चुकी थी।

इधर रहीम व धरा के अपहरण से बेखबर राम नारंग के साथ गुफा तक पहुंच चुका था।
शुक्र है। धरा के कोल्ड ड्रिंक में नशीला 'सीरप' मिलाकर उसे कमजोर बना देने व लोटिया को धरा के पास रोकने की बिल की योजना सफल रही।
अब तक तो बिल के आदमी उन दोनों को अपने कब्जे में भी कर चुके होंगे। अब बचा यह झुमरू दादा... तो खजाना हासिल होते ही इसे मार डालने में भला मुझे कितना समय लगेगा।
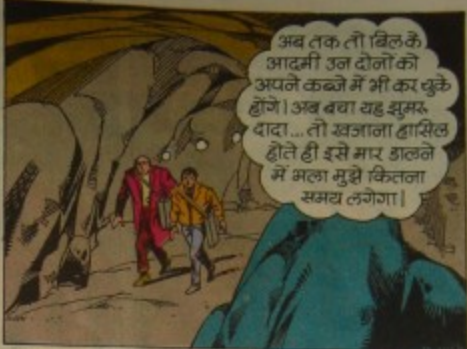
सावधान मानव। अब तू पहले द्वार तक पहुंच चुका है। मगर याद रख। ये पांच द्वार भेदते समय तुझसे जरा भी चूक हुई तो तुझे यहीं अपने प्राण त्यागने पड़ेंगे और द्वार भेद लेने पर तुझे मिलेगा मेरे ज्ञान-विज्ञान का अनमोल भण्डार।
यह आवाज़ कहां से आ रही है?
चुप रहो। और मुझे आगे सुनने दो।
हे मानव। इन दोनों द्वारों पर खड़े पहरेदारों में एक सच बोलता है, दूसरा झूठ। इन पहरेदारों के पीछे दो दरवाजे हैं। एक दरवाजा खजाने तक और दूसरा मौत के मुंह तक जाता है। खजाने का दरवाजा कौन सा है।
यह जानने के लिए तू इन पहरेदारों से सिर्फ एक सवाल कर सकता है। दूसरा सवाल करते ही पहरेदारों की तलवारें तेरा सिर काट देंगी। अतः सोच-विचार करके सवाल करना। मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

खजाने के द्वार का पता लगाने के लिए इनमें से किसी एक पहरेदार से कोई कॉमन सवाल करना होगा।
मगर वह कॉमन सवाल क्या हो?

काफी देर तक सोचने के बाद एकाएक उछल पड़ा राम।
मुझे वह कॉमन सवाल मिल गया नारंग।
अगले क्षण राम दाएं दरवाजे पर खड़े पहरेदार के सामने आकर बोला।
श्रीमान पहरेदार जी। यदि मैं तुम्हारे साथी यानी उस पहरेदार से पूछूं कि हमें दूसरे द्वार तक पहुंचाने वाला सही रास्ता कौन सा है तो वह क्या जवाब देगा?
अगले क्षण पहरेदार ने दूसरे द्वार की तरफ ईशारा किया।
वह तुम्हें बाएं दरवाजे से जाने के लिए कहेगा।
अगले क्षण राम ने दायां द्वार खोला और अंदर प्रविष्ट गया।
आओ नारंग। यही रास्ता हमें दूसरे द्वार तक ले जाएगा।
कमाल है झुमरू दादा। तुमने कैसे जाना कि यही द्वार खजाने तक जाता है?
कल्पना करो नारंग कि हमने जिस पहरेदार से पूछा है, वह सच्चा है। अतः वह हमेशा सच ही कहेगा। साथ ही वह यह भी जानता है कि उसका साथी झूठा है और सही द्वार का पता पूछने पर वह झूठ बोलेगा और हमें बाएं द्वार यानी गलत द्वार से जाने के लिए कहेगा।

मान लिया! लेकिन हमने जिस पहरेदार से पूछा, यदि वह झूठ बोलने वाला होता तो।
तो झूठा होने के नाते वह हमेशा झूठ ही बोलेगा। साथ ही वह यह भी जानता है कि उसका साथी सच्चा है और वह सही द्वार यानी दाएं द्वार से जाने के लिए कहेगा। किंतु झूठा होने के नाते वह यह कहेगा कि दूसरा पहरेदार तुमसे बाएं द्वार से जाने के लिए कहेगा। यानी हम उससे पूछते कि उसका साथी कौन सा रास्ता बताएगा तो वह बाएं दरवाजे की तरफ ईशारा करके ही कहता कि 'बायां दरवाजा बताएगा' जबकि बायां दरवाजा तो गलत है।
अतः दोनों ही सूरतों में दोनों पहरेदार बायां दरवाजा ही बताएंगे और हमें सही द्वार अर्थात दाएं द्वार का पता मिल गया।
एकाएक गुफा में जैसे तूफान आ गया!
आह! मेरी आंख!
म... मेरी नाक!
यह सब क्या है?
...त के गहन अन्धकार में विल अपने आदमियों के साथ ...फा तक पहुंच चुका था
हा... हा... हा... उधर वो दोनों पांचों द्वार ...द कर खजाने तक पहुंचेगा। ...धर हम उनके पीछे खजाने ...क पहुंच कर उनकी लाशें बिछा कर सारा खजाना अपने कब्जे में कर लेगा।
गुफा में बड़ा अन्धेरा है! पता नहीं इस टार्च को भी एकाएक क्या हो गया।
दुष्ट आत्माओं! हम वराहमिहीर की गुफा की रक्षा करने वाली पवित्र शक्तियां हैं। अपने प्राण बचाना चाहते हो तो फौरन वापस लौट जाओ।
लौट चलिए बॉस! नारंग ने हमसे ठीक कहा था। ये इण्डियन लोग बड़े जादूगर होते हैं।
शटअप! यू ब्लडीफूल! पता लगाओ कि यह आवाज कहां से आ रही है।

यह आवाजें हमारी हैं दुष्टों। यदि हमारी चेतावनी पर अमल न किया तो बुरी मौत मारे जाओगे।

माई गॉड! उड़ता हुआ कंकाल! भागिए बॉस।

अगले क्षण बिल व उसके आदमी सिर पर पैर रखक भागे...

...तो उन्होंने गुफा से बहुत दूर आकर ही दम लिया।

हम्फ... हम्फ... ठहरो!

क्या हुआ बॉस... हम्फ हम्फ...

अरे मूर्खों। यदि हम पवित्र शक्तियों के कारण गुफा में प्रवेश नहीं कर सकता तो कम से कम गुफा के बाहर उन दोनों के वापस होने का इन्तजार तो कर सकता हैं, ताकि उन्हें शूट करके सारा 'खजाना' हासिल कर सके।

इधर अपनी मौत से बेखबर राज, बारंग के साथ दूसरे द्वार तक पहुंच चुका था।
हे मानव! इस द्वार को भेदने के लिए तुझे मेरी एक कहानी सुननी होगी। और अन्त में सही जवाब देना होगा... ध्यान से सुन।

यह सेठ बहुत ही सीधा व सेठानी बहुत चालाक है। एक दिन सेठ तराजू व बाट लिए दुकान पर बैठा चावल बेच रहा था।

तभी एक ठग चावल की पोटली लेकर आया और सेठ को बातों में बहला कर अपने चावल सेठ के चावल में मिला दिए... और उनमें से दस किलो चावल तुलवा कर चलता बना।

इसके बाद दूसरा व तीसरा ठग आया। उन्होंने भी वही प्रक्रिया अपनाई और दस-दस किलो चावल लेकर चलते बने।
याद रहे तीनों ठगों ने उतने ही चावल मिलाये थे जितने कि हर ठगी के बाद व पहले सेठ के पास शेष बचे थे।

अन्त में सेठ के पास चावल का एक दाना तक न बचा। जब सारे चावल लुटवा कर सेठ घर पहुंचा तो सेठानी उस पर बहुत नाराज हुई और अगले दिन उसने स्वयं चावल लेकर दुकान पर बैठने का निश्चय किया।

कल की तरह आज भी एक-एक करके तीनों ठग आए और अपने अपने हिस्से के चावल सेठानी के चावल में मिलाकर दस-दस किलो चावल लेकर चलते बने।
याद रहे यहां भी ठगों ने उतनी ही मात्रा में चावल मिलाने थे। जितने सेठानी के पास हर ठगी के बाद या पहले शेष बचते थे।

अन्त में सेठानी के पास ढेर सारा चावल बचा। जितने किलो चावल लेकर सेठानी दुकान पर बैठी थी, वह तो उसने बचा लिए। साथ ही साथ वे तीनों ठग सेठ से जितने चावल ठग ले गए थे, वे भी उसने वापस हासिल कर लिए।

हे मानव! तूने कहानी ध्यान से सुनी होगी। अब तुझे यह बताना है कि सेठ व सेठानी कितने-कितने किलो चावल लेकर दुकान पर बैठे थे ...

...जो उत्तर आए। उतने ही किलो के बाँट सामने रखे तराजू के दोनों पलड़ों पर बराबर-बराबर रख देना। ऐसा करते ही तीसरे द्वार तक पहुंचने का रास्ता, खुल जाएगा।
बड़ी अजीब कहानी है।
कहानी है पहेली है। और पहेली में हमारा छुपा है। मुझे हिसाब लगाने नारंग।

काफी देर तक राम चुपचाप बैठा जोड़, बाकी, गुणा-भाग करता रहा। फिर एकाएक उठा और बोला।
मुझे हल मिल गया नारंग।
आश्चर्य है तू लड़का है कम्प्यूटर

मगर राम ने सारंग की बात का कोई जवाब दिए बिना ही फर्श पर पड़े बाट जैसे पत्थर उठाए।

जैसे ही राम ने तराजू के दोनों पलड़ों पर बराबर वजन रखा।

फौरन सेठ व सेठानी की मूर्ति फर्श में धंसने लगी।

थोड़ी देर बाद मूर्तियों की जगह केवल एक चौड़ी सुरंग दिखाई पड़ रही थी।
आओ सारंग। यही सुरंग हमें तीसरे द्वार तक ले जाएगी।
मगर तुमने यह हल खोजा कैसे ?

बताता हूँ। सेठ पौने नौ किलो व सेठानी सवा ग्यारह किलो चावल लेकर बैठी थी।

अब सेठ के पास शेष बचे पांच किलो चावल। जिनमें तीसरा ठग आकर अपने हिस्से के पांच किलो चावल मिला देता है। सेठ के पास हो गए दस किलो चावल, जिन्हें तीसरा ठग लेकर चम्पत हो गया। अब सेठ के पास क्या बचा?

कुछ भी नहीं। वाह!

अब सेठानी के पास बचे साढ़े बारह किलो चावल में दूसरा ठग उतने ही चावल अपने पास से और मिलाता है। हो गए पच्चीस किलो चावल। जिनमें से वह दस किलो चावल लेकर चलता बना।

अरे हां! अब सेठानी के पास बचे पन्द्रह किलो चावल में तीसरे ठग के चावल मिलाते ही तीस किलो चावल हो गए। जिनमें से उसके दस किलो चावल निकालते ही सेठानी के पास बीस किलो चावल बच गए।

बिल्कुल ठीक! इस तरह सेठानी ने अपने सवा ग्यारह किलो चावल भी बचा लिए और सेठ द्वारा गंवाये पौने नौ किलो चावल भी तीनों ठगों से वापस हासिल कर लिए।
सचमुच! कितना आसान था।
पाठकों की सुविधा के लिए यह हल यहां सरल रूप में दिया जा रहा है।
सेठ
8-750 Kg.
पहला ठग + 8-750 Kg.
17-500 Kg.
- 10-000 Kg.
7-500 Kg.
दूसरा ठग + 7-500 Kg.
15-000 Kg.
- 10-000 Kg.
5-000 Kg.
तीसरा ठग + 5-000 Kg.
10-000 Kg.
- 10-000 Kg.
शेष बचे = 00-000 Kg.
सेठानी
11-250 Kg.
पहला ठग + 11-250 Kg.
22-500 Kg.
- 10-000 Kg.
12-500 Kg.
दूसरा ठग + 12-500 Kg.
25-000 Kg.
- 10-000 Kg.
15-000 Kg.
तीसरा ठग + 15-000 Kg.
30-000 Kg.
- 10-000 Kg.
शेष बचे = 20-000 Kg.
जिस तरह तुम एक के बाद एक दरवाजे भेद रहे हो। उसे देखते हुए मुझे श्या की बात सच लगने लगी है कि कहीं सचमुच तुम भारत के विख्यात जासूस राम तो नहीं?
मैं इस देश का प्रधानमंत्री भी हो सकता हूं।
नहीं... तुम उज्जैन के छोटे-मोटे दादा नहीं हो सकते। तुम अवश्य ही कोई जादूगर, बाजीगर या करिश्माई हस्ती हो।
खजाना मिलने के बाद बैठ कर आपस में डिसकस करेंगे कि मैं कौन हूं। फिलहाल सामने द्वार दिखाई पड़ रहा है।
गुफा से बहुत दूर इस सुनसान इलाके में।
उज्जैन में आपका स्वागत है शेर जी भाई।
अब तक की रिपोर्ट दो हैदर।

सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है शेर जी भाई। नारंग एक थर्ड क्लास दादा के साथ गुफा में प्रवेश कर चुका है। लोटिया व धरा बिल के कब्जे में हैं। और बिल स्वयं गुफा के निकट जमा बैठा है।
तू भी उसके साथ जमा रह। बाकी मैं सम्भाल लूंगा।
जो हुक्म बाप।
एकाएक शेरजी भाई के हाथ से अपने बंधन तुड़ा कर उसके दोनों पालतू शेर के बच्चे एक दिशा में भाग खड़े हुए।
लगता है उन्हें किसी शिकार की गन्ध मिली है।
तुम सब यहीं मेरा इन्तजार करो। मैं उन्हें सम्भालता हूं।
बरोबर बाप, बरोबर!
कहां चले गए दोनों?

धांय
धांय
ग... गोली! किसी ने गोली चलाई है मेरे शेरों पर
उफ! किसने... किसने मार डाला इन्हें? कौन है वो... जिसने शेर की भाई से टकराने की जुर्रत की है?
मगर आसपास कोई होता तो जवाब देता ना! तभी –
ओह! इस बियावान जंगल में वह कुटिया कैसी है! चल कर देखना चाहिए।
कुटिया तो एकदम खाली पड़ी है।
तभी –
टक टक... टक...
लगता है कोई इधर आ रहा है! मुझे छुपकर देखना चाहिए।

अब तुम्हें यह बताना है कि राजकुमार कितने फल तोड़े कि तीनों रक्षकों को दिया हुआ वचन भी पूरा हो जाए... और उसके पास अपने पिता के इलाज के लिए अमृत फल भी बच जाए।

काफी देर तक सोच-विचार के बाद, राम अमृत वृक्ष की तरफ बढ़ा।
मिल गया उत्तर।
वृक्ष से दो अमृत फल तोड़ कर उसने राजकुमार की हथेली पर रख दिए।
अगले क्षण वृक्ष का तना चमत्कारिक ढंग से दो हिस्सों में खुल गया।
आओ मानव। चौथा द्वार तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।
देखा बाप, कितना आसान था इस मुश्किल पहेली का हल। राजकुमार दो फल तोड़ेगा। उनमें से आधे यानी एक फल सर्व-प्रथम तीसरे रक्षक को देगा और शर्त के अनुसार वही एक फल वापस ले लेगा।
अब वह दूसरे रक्षक के पास पहुंचेगा। उसे भी दो में से आधे यानी एक फल देगा और शर्त के अनुसार वही फल वापस ले लेगा।
अन्त में वह उद्यान के सबसे बाहरी द्वार पर खड़े पहले पहरेदार के पास पहुंचेगा और यही प्रक्रिया अपना कर अपने पिता के लिए दोनों अमृत फल बचा लेगा।

क्योंकि राजकुमार की यही तो शर्त थी कि जितने फल वह तोड़ेगा उनमें से आधे रक्षकों को देगा और उनसे एक फल वापस ले लेगा।
मान गए तुम वाकई जीनियस हो।
इधर गुफा के बाहर!
मेरा विचार है बॉस! हमें वापस अमेरिका लौट जाना चाहिए। वे दोनों अवश्य किसी न किसी द्वार में फंस कर मर गए होंगे।
तुझे किस उल्लू के पट्ठे ने हमारे गैंग में शामिल किया?
ब... बॉस! आपने ही!
शटअप!
चाहे कयामत आ जाए... चाहे धरती फट जाए, मगर हम यहां से एक इन्च भी नहीं हिलेगा।
कयामत तो आ चुकी है बस... थोड़ा इन्तज़ार कर।
यह कैसी पहेली है। तीन बन्दर अलग-अलग बैठे हैं। उनके सामने तीन पानी के कुण्ड बने हुए हैं। पहले बन्दर के निकट एक केले का पेड़ लगा हुआ है। जिसमें ढेर सारे केले लटक रहे हैं।
लेकिन इसमें पहेली जैसी क्या बात है। तीनों बन्दरों को केले खिलाओ और आगे बढ़ जाओ।

ये बन्दर नकली हैं। इसलिए केले तो ये खा नहीं सकते। मगर तुम्हें इन तीनों बंदरों के हाथ में बराबर-बराबर केले इस प्रकार रखने हैं कि अन्त में तुम्हारे पास एक भी केला न बचे। अत: पेड़ से तुम्हें एक ही बार निश्चित संख्या में केले तोड़ने हैं।
लेकिन इन तीनों जलकुण्डों की क्या महिमा है?
ये जलकुण्ड अद्भुत हैं। इनमें जितने केले डुबोये जाएं, उससे दुगनी केले बाहर निकालते हैं। ध्यान रहे... प्रत्येक बन्दर को केले देने से पहले उन्हें जलकुण्ड में डुबोना जरूरी है।
अजीब पहेली है। पहले हमें पेड़ से सिर्फ एक बार व निश्चित संख्या में केले तोड़ने हैं। फिर उन्हें जलकुण्ड में डुबो कर बारी-बारी से तीनों बन्दरों में इस प्रकार बांटने हैं कि...
...अन्त में हमारे पास एक भी केला न बचे। और तीनों बन्दरों को बराबर-बराबर केले मिलें, अपुन की तो खोपड़ी घूम गई बाप।
इधर कुटिया में प्रवेश करने वाले औघड़बाबा थे। जिनके कदमों की आवाज सुनकर शेरजी भाई चौंका था।
बम... बम भोलेनाथ!
ओह! औघड़बाबा!
लगता है मैं गलती से किसी औघड़ बाबा की कुटिया में आ पहुंचा। कहीं मुझे कुटिया में देखकर औघड़बाबा मुझे कोई श्राप न दे डाले।

जब तक यह औघड़ बाबा वापस नहीं चला जाता। मुझे यहीं छुपे रहना होगा।
बम-बम भोलेनाथ!
इधर चौथे द्वार पर।
सात केले! हां! हमें पेड़ से सात ही केले तोड़ने हैं नारंग, क्योंकि यही इस पहेली का हल है।
ध्यान से सुनो। जब सात केलों को पहले कुण्ड में डुबोया तो हो गए चौदह केले। जिनमें से आठ केले पहले बन्दर को दिए। शेष बचे छः केलों को दूसरे कुण्ड में डुबोया तो हो गए बारह केले। जिनमें से आठ केले दूसरे बन्दर को दिए।
अब बाकी बचे चार केलों को तीसरे कुण्ड में डुबोया तो हो गए आठ केले। जिन्हें हमने तीसरे बन्दर को दे दिया। अब हमारे पास कितने केले बचे नारंग?
एक भी नहीं।
और बन्दरों के हिस्से में कितने-कितने केले आए?
आठ-आठ। यानी बराबर-बराबर। अरे हां... यही तो इस पहेली की शर्त थी।

तब तक तीसरे वृक्ष का पानी चमत्कारिक ढंग से धीरे-धीरे गायब हो गया था।

आओ मारंग। यही सीढ़ियां हमें पांचवें द्वार तक पहुंचाएंगी।

छोटी सी कोठरी पार करते ही दोनों पांचवें द्वार पर थे।

हे श्रेष्ठ मानव! अब तू अपनी तिलिस्मी यात्रा के अन्तिम पड़ाव पर खड़ा है। यह द्वार टूटते ही तू मेरे अद्‌भुत खजाने तक पहुंच जाएगा।

मगर अपनी बुद्धि से इस बेचारे जौहरी की समस्या तो हल कर। यह जौहरी महाराजा विक्रमादित्य को कुछ हीरे भेंट करना चाहता था। अतः दो छोटे-छोटे सन्दूकों में आठ-आठ हीरे लेकर वह राजमहल पहुंचा।

मगर कोठरी में खड़े आठों पहरेदारों ने यह तय किया कि वे जौहरी से एक सन्दूक का एक हीरा व दो सन्दूक के दो हीरे 'कर' के रूप में लेंगे।

कर = टैक्स

सचमुच। पहरेदारों की दो-दो हीरे टैक्स देने के बाद तो जौहरी के पास कुछ नहीं बचेगा... और पहरेदार टैक्स लिए बिना थोड़े ही मानेंगे।
मैंने इस पहेली का भी हल ढूंढ लिया है नारंग।
ढूंढ लिया... तूने हल ढूंढ लिया। कमाल है... कहीं तू वराहमिहीर का कलयुगी अवतार तो नहीं है?
सुनो नारंग। पहरेदारों की यह शर्त है ना कि उन्हें टैक्स के रूप में एक सन्दूक का एक हीरा व दो सन्दूक के दो हीरे चाहिए। उन्होंने यह तो नहीं कहा कि उन्हें दोनों हीरे अलग-अलग सन्दूकों से ही दिए जाएं।
सर्वप्रथम वह जौहरी अपना पहला सन्दूक खोलेगा... और सन्दूक में रखे आठों हीरे चार पहरेदारों को टैक्स के रूप में दे देगा। इस प्रकार उसका पहला सन्दूक तो खाली ही गया। जिसे वह एक तरफ फेंक देगा।
अब जौहरी के पास एक ही सन्दूक रह गया। और शर्त के अनुसार बाकी बचे चारों पहरेदार एक सन्दूक का टैक्स केवल एक-एक हीरा ही ले सकते हैं।
इस प्रकार जौहरी द्वारा बा चार पहरेदारों को एक हीरा देने के भी उसके सन्दूक चार हीरे बच जा जिन्हें वह आसा महाराज विक्रमादि भेंट कर सकता
हे श्रेष्ठ बुद्धि के मानव! पांचों पहेलियां हल करने पर मैं तुझे बधाई देता हूं। आज से मेरा अद्भुत खजाना तुम्हारा हुआ। अन्दर चले आओ मानव।

खुशी के अतिरेक से नागराज की जुबान जैसे तालू से चिपकी रह गई थी।
ख... खजा
ख... ख...
हाँ नागराज! यही है वराहमिहीर का वो अद्भुत खजाना...ये स्वर्ण पत्तर, जिन पर लिखे हैं विज्ञान के वो अद्भुत फार्मूले जिनसे आज का विज्ञान भी अनजान है।

यह सारा खजाना मेरा है। दो टके के बदमाश अब मरने के लिए तैयार हो जा।
नहीं नारंग, नहीं! यह सारा खजाना तुझ जैसे पापी का नहीं, बल्कि इस देश की अमानत है।
राम द्वारा फेंका गया स्वर्ण पत्तर नारंग के हाथ से टकराते ही रिवॉल्वर छिटक कर दूर जा गिरा।
राम की अप्रत्याशित हरकत ने नारंग को बौखला कर रख दिया था।
त... तुम उज्जैन के दो कौड़ी के दादा नहीं हो सकते। सच-सच बताओ, कौन हो तुम?
वही, जो तुमसे कहा था। जादूगर, बाजीगर या करिश्माई हस्ती। इस देश की माटी से उपजा एक छोटा सा लाल। जो तुझ जैसी पापात्माओं को खत्म करने के लिए राम के नाम से जाना जाता है।
धांय
उफ्ऽऽऽ
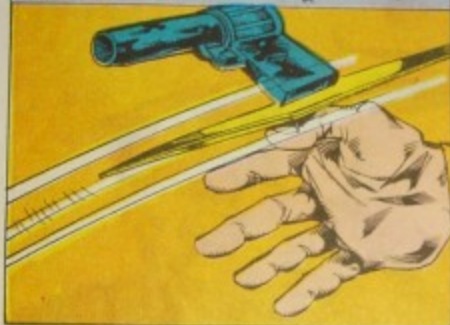
गोली लगते ही बारंग के प्राण पखेरू उड़ गए थे।

राम ने बारंग का कोट उतार कर सभी पच्चीस स्वर्ण पत्तर उसमें रखकर एक बड़ी सी पोटली बना ली-
इस गुफा में कोई पिछला द्वार अवश्य होगा। और उस द्वार के खुलने का सिस्टम निश्चित ही बराहमिहीर की इस मूर्ति में छिपा है।

इस मूर्ति से ऐसा प्रकट हो रहा है। जैसे बराहमिहीर अपने आसन पर बैठ कर कुछ लिखने का प्रयास कर रहे थे कि अचानक कलम उनके हाथ से छिटक कर नीचे जा गिरी...

...मुझे यह कलम उठा कर बराहमिहीर की इस प्रतिमा के हाथ में थमा देनी चाहिए।

अभी राम ने कलम बराहमिहीर के हाथ में थमाई ही थी कि तीव्र गड़गड़ाहट के साथ दीवार में एक रास्ता बनता चला गया।
गड़ड़ड़ड़ssssssss

हे भाग्यवान! खजाना पाने के बाद भला यह किसे ध्यान रहता है कि उसे मेरी प्रतिमा के हाथ में कलम भी रखनी चाहिए। मगर तूने यह कलम मेरे हाथ में थमाकर सिद्ध कर दिया कि तू बुद्धि में श्रेष्ठ है...

...और इन स्वर्णपत्तरों का असली उत्तराधिकारी भी।
थ... थैंक्यू, वराहमिहिर जी।

अगले क्षण राम पोटली को कन्धे पर लादे उस पश्च द्वार की सीढ़ियां चढ़ता चला गया।

कुछ समय पश्चात जंगल में बनी इस टूटी-फूटी कुटिया में।
अब तुम्हें औघड़बाबा का स्वांग रचने की आवश्यकता नहीं है...। जीत हमारी हुई। कौन कह सकता है कि तुम औघड़ बाबा नहीं, बल्कि भारतीय सीक्रेट सर्विस के 002 हो। जिसे मेरे अनुरोध पर चीफ मुखर्जी ने इस मिशन पर लगाया था।

लेकिन सारी प्लानिंग तो तुम्हारी ही थी राम! नारंग को प्रभावित करने के लिए जो बिल्ली का मांस मैंने तुम्हें खिलाया था। वह सचमुच का मांस थोड़े ही था!
हां... हां...! मालूम है। वह मांस की तरह बनाया गया स्पेशल केक था मीठा... मीठा...!

और बेचारे नारंग को प्रसाद ग्रहण न करने के लिए मैंने कैसा फटकारा था। और डरा भी दिया था।
ताकि उसके आदमी मेरे पीछे-पीछे गुफा में प्रवेश न कर सकें।
उसके बावजूद भी नारंग के साथ जुड़े बिल व उसके आदमियों ने ऐसा प्रयास तो किया था। मगर मैं तुम्हारे आदेश के मुताबिक पहले से ही गुफा में चौकन्ना होकर बैठा था।
फिर तुमने उन्हें कैसे रोका?
इन रिमोट से चलने वाले चमगादड़ों व हवा में उड़ने वाले नकली कंकालों से डरा कर...
...और...और लाउड स्पीकर द्वारा उन्हें वराहमिहिर की पवित्र शक्तियों की चेतावनी देकर।
मगर इस बीच एक दुर्घटना घट गई है राम। रहीम व धरा का होटल से अपहरण कर लिया गया है।
ओह! तब हमें फौरन यहां से निकल कर होटल शालीमार पहुंचना चाहिए।
इतनी जल्दी भी क्या है महानुभावों

इससे पहले कि राम व 002 कुछ समझ पाते, उनके सिर पर भारी-भरकम चोट हुई।

हा... हा... हा... इन्हें क्या मालूम कि शेर जी भाई पहले से ही चोर पर मोर बन कर इस कुटिया में छुपा बैठा था।

ले चलो इन्हें! अभी मुझे किसी और से भी निपटना है।

अगले क्षण शेर जी भाई व उसके आदमियों की मशीनगनें दहाड़ उठीं।
रेट... रेट... रेट

हकबकाया सा बिल चारों तरफ पड़ी अपने आदमियों की लाशें ताक रहा था।

शाबाश हैदर! तूने बिल की गैंग में घुस कर जिस तरह हमें हर पल की खबर दी उससे अपुन बहुत खुश हुआ। आज से तू हमारा दायां हाथ हुआ।
थैंक्यू... बाप, थैंक्यू!

कुछ समय पश्चात वजाने कहां।
चालें तो तुमने खूब अच्छी चली राम। मगर शेर जी भाई ने एक ही दांव में सारा गेम पलट दिया। अब शेर जी भाई यह स्वर्ण पत्तर बेच कर अरबों रुपये कमाएगा।
यह खजाना इस देश की अमानत है कुत्ते।

एक मिनट शेर जी भाई। इन स्वर्ण पत्तरों में लिखा साइंस का फार्मूला तुम्हारे लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है। तो क्यों ना तुम हमें ही ये स्वर्ण पत्तर पचास करोड़ डॉलर में बेच दो?

मंजूर! मगर माल की खरीद-फरोख्त यहां नहीं, लद्दाख के निकट लेह में होगी। क्योंकि वहां भारतीय सेना का कोई डर नहीं है।
ठीक है। मैं अमेरिका कॉल करता हूं कि फौरन तुम्हारे स्विस बैंक के खाते में पचास करोड़ डालर जमा कर दिया जाए।
लद्दाख के निकट स्थित लेह नामक वह खूबसूरत पर्यटन स्थल जहां इन दिनों कड़ाके की ठण्ड होने के कारण पर्यटकों की आवाजाही करीब-करीब न के बराबर थी।
सारी तैयारी हो चुकी है बाप। बिल साहब के जाने के लिए हमने विमान का बंदोबस्त भी कर लिया है।
मैं भी आपके साथ चलना चाहती हूं बिल साहब
त...तुम। मगर क्यों?
क्योंकि मुझे अमेरिका से प्यार है अमेरिका जाकर तुम्हारे साथ शादी रचाऊंगी और ऐश की जिन्दगी जियूंगी। आखिर भारत में रखा ही क्या है सिवाय गरीबी और भूखमरी के।
वाह...! हम तुमसे खुश हुआ।
जरा अपना कागज व पेन दीजिए बिल साहब। जाने से पहले मैं इन बेवकूफ लड़कों के जले पर नमक छिड़कना चाहती हूं।
जरूर!

कागज पर कुछ लिख कर वह रहीम के ... पहुंची।
तूने क्या समझा था ...वकूफ कि मैंने सचमुच ...अपना भाई बना लिया। ...चोरी से जा सकता है हेराफेरी से नहीं।
मेरी नजरों से दूर चली जा नागिन।
जा रही हूं। दूर ही जा रही हूं मूर्ख। इतनी दूर... कि तू सात जन्मों तक मुझे ढूंढ नहीं पाएगा। जाने से पहले यह कागज तेरी जेब में ठूंसे जा रही हूं।
मगर धरा ...र्लिंग इस कागज ... तुमने क्या लिखा है?
कुछ ऐसा लिखा है जिसे पढ़कर यह बेचारा अपने सिर के बाल नोचता रह जाएगा। हा... हा... हा...
कुछ ही क्षणों में बराहमिहिर की धरोहर व धरा को लिए बिल का विमान आसमान में उड़ता चला गया।
जा नागिन जा! तेरी मौत बहुत भयानक हो। खुदा तुझे कभी माफ नहीं करेगा धरा।
हा... हा... हा... बड़ा दुख हो रहा है। तुम्हें वह खजाना चले जाने का। ठहरो... मैं तुम तीनों का दुख हमेशा के लिए मिटा देता हूं।

हैदर! इन तीनों को एक-एक करके गोली से उड़ा दो।
बरोबर बाप... अभी खलास करता हूं सालों को।

इससे पहले कि हैदर की मशीनगन गोली उगलती, दूर से चली गोलियां हैदर का भेजा उड़ा गईं।
रेट... रेट... रेट...

दूर से भारतीय सेना की एक टुकड़ी चली आ रही थी।
डोंट मूव! वरना एक-एक को गोली से भून दिया जाएगा।

शुक्र है
यहां आने
पहले ही भार
सेना के हैडक्वा
पर संदेश भिज
दिया था, क्यों
दुश्मनों को मेरी
में छिपे माइक्र
ट्रांसमीटर का
नहीं था

तब तक मेजर राय की गन एक बार फिर खांस उठी।
रेट... रेट... रेट...

इधर राव का निशाना एकदम सच्चा था। अगले पल राम-रहीम व 002 की जंजीरें टूट चुकी थीं।
देख क्या रहे हो मूर्खों मुकाबला करो।
पलक झपकते शेर जी भाई समेत उसके सभी आदमियों ने बर्फीली टीलों की शरण ली।
आप चिल्ला न करें बाप। एक भी जिन्दा बच कर वापस नहीं आएगा।
इधर शेर जी भाई के आदमियों की गनें खांस उठीं।
च्युम...च्युम
च्युम...च्युम
रेट...रेट...रेट
इधर रहीम कलाबाजी खाता हुआ शेर जी भाई के एक आदमी पर आकर गिरा।
मर कुत्ते!

उधर भारतीय सेना ने अपने हथियारों के मुंह खोल दिए।
रेट...रेट...रेट
अचानक जंग छिड़ गई थी सिंह की धरती पर।

आपने आने में जरा देर कर दी मेजर साहब! वो बिल का बच्चा बराहमिहीर का खजाना लेकर भाग रहा है।
मेरी गन से निकले शोले विमान के परखच्चे उड़ा देंगे राम!

अगले क्षण मेजर राव ने मशीनगन का मुंह विमान की तरफ कर दिया।
रेट...रेट...रेट...

मगर पहाड़ी का चक्कर काट कर दर्रे की तरफ जाता विमान गोलियों की रेंज से बाहर हो चुका था।
राकेट लॉंचर दागो...जल्दी!

मगर राकेट लॉंचर से निकला राकेट भी विमान तक पहुंच नहीं पाया।
धड़ाम
शूंऽऽऽऽ

अब क्या करें राम? विमान को ब्लास्ट करने की हमारी सारी कोशिशें नाकाम रहीं।
अब तो विमान को बिल समेत उड़ाने के लिए किसी चमत्कार की ही आशा की जा सकती है।

तब तक भारतीय सेना शेर जी भाई के समस्त आदमियों को परलोक पहुंचा चुकी थी।

...फिसली बचा बाहर आ रहा था अण्डरवर्ल्ड ...डॉन।

उफ! मेरे सारे आदमी मारे गए। मुझे यहां से भागना होगा।

यहीं कुत्ते! तेरी लाश भी यहीं गिरेगी।

नहीं... नहीं! मुझे मत मारो। मैं अण्डर-वर्ल्ड का डॉन हूं। सबको खलास कर दूंगा। मुझे मत मारो... है... है... है...

साले डरपोक... थे है।

रेट... रेट... रेट...

...से लथपथ शेर भी भाई ...मीन पर ऐसा गिरा कि फिर ...भी न उठा।

तूने एक भाई के साथ विश्वासघात किया है धरा। एक दिन इसी कागज पर तेरे खून से हस्ताक्षर करूंगा मैं।

एकाएक रहीम की निगाहें कागज पर लिखे मजमून पर फिसलती चली गईं।

प्यारे रहीम भइया

तुम यही समझ रहे हो ना कि मैंने अपने देश के साथ दगा किया। नहीं भइया बिल को मारने का यही एक तरीका था कि मैं उसके साथ विमान में सवार होकर दूर चली जाऊं और तुम अपने सिगरेट केस में छुपे रिमोट का स्विच दबा दो। ताकि मेरे बालों में छुपा रिमोट बम फट जाए। मुझे खुशी है कि मैं अपनी मातृभूमि के लिए मरने जा रही हूं। लेकिन भइया— आपको यह काम करना ही होगा। आपको अपनी प्यारी बहन की कसम।

अगले क्षण आसमान में उड़ते विमान के परखच्चे उड़ गए।
धड़ाम
अरे..! यह विमान अचानक ब्लास्ट कैसे हो गया रहीम?
बिलखते हुए रहीम ने धरा का लिखा हुआ पत्र राम की तरफ बढ़ा दिया।
पत्र जिस-जिसके हाथ से गुजरा। उसी की आंखें नम होती चली गईं।
उसने सच कहा था राम। वह सचमुच हमसे इतनी दूर चली गई, जहां से अब वह कभी लौट कर नहीं आएगी। मेरी बहन दगाबाज नहीं थी राम... मेरी बहन दगाबाज नहीं थी... सुबक... सुबक
धरा मर कर भी हमारे दिलों में अमर हो गई है रहीम। उसका एक-एक कण हिमालय की बर्फ में मिल गया है। यही बर्फ जब पिघल कर गंगा का पानी बनेगी। तो उस पानी को पीकर न जाने कितनी माताएं धरा जैसी ललनाओं को जन्म देंगी।
मेजर राय ठीक कहते हैं रहीम। अपने आंसू पोंछ लो।
मगर रहीम के आंसू कहां थमे थे।
वह उन बर्फीली वादियों की ओर ताक रहा था, जहां धरा समेत वराहमिहिर के स्वर्ण पत्तर भी पिघल कर हिमालय की वादियों में समा गए थे।
समाप्त